1. वर्ड्सवर्थ

प्रस्तावना—पाश्चात्य काव्यशास्त्र में विलियम वर्ड्सवर्थ (1770-1850 ई.) का नाम एक ऐसे महान् शख्सियत के रूप है, जिनकी ख्याति आलोचक के रूप में कम, कवि के रूप में ज्यादा है। **कॉलरिज, बाइरन, शैली, कीट्स**, सादी सरीखे प्रसिद्ध अंग्रेजी कवियों के समकालीन विलियम वर्ड्सवर्थ 1843 ई. में इंग्लैण्ड के 'पोएट लारियट (Poet Loriyat) अर्थात् राजकवि के पद से नवाजे गये। रोमानी काव्ययुग के प्रवर्तक के रूप में अपनी धाक जमा चुके वर्ड्सवर्थ की 'ऐन इवनिंग वॉक एण्ड डिस्क्रिप्टिव स्केचेज' शीर्षक कृति 1793 ई. में प्रकाश में आ चुकी थी, किन्तु 1798 ई. में जब 'लिरिकल बैलेड्स' एवं 1800 ई. में इसके द्वितीय संस्करण (लिरिकल बैलेड्स की भूमिका के साथ) का प्रकाशन हुआ, तब विलियम वर्ड्सवर्थ प्रसिद्धि के पायदान के चरम शिखर पर थे। इन्होंने स्पष्ट किया कि काव्य के द्वारा हमारे भावों को शक्ति मिलनी चाहिए। भावों को प्रभावित करने की शक्ति ही काव्य की विशेषता है। ऐसा लगता है कि वर्ड्सवर्थ के स्वर में एक कुशल चिकित्सक का निदान है।

काव्य भाषा सिद्धान्त—वर्ड्सवर्थ के अनुसार—

1. **काव्य में ग्रामीणों की दैनिक भाषा का प्रयोग होना चाहिए।** ग्रामीण जीवन में मनुष्य के भाव सरल, निष्कपट सच्चे होते हैं तथा प्रकृति के निरन्तर सम्पर्क से विकसित होते हैं, इसलिए उनमें तादात्म्य सुगम होता है।

2. गद्य और पद्य की भाषा में तात्विक भेद नहीं होता।

3. प्राचीन कवियों का भावाबोध जितना सरल था उनकी भाषा उतनी ही सहज थी और भाषिक कृत्रिमता और आडम्बर बाद के कवियों की देन है।

वर्ड्सवर्थ ने काव्य भाषा सिद्धान्त के विषय में अपना एक निश्चित मत प्रस्तुत किया उसने माना कि **कविता की भाषा जनसाधारण से जुड़ी होनी चाहिए।**

वर्ड्सवर्थ के पूर्व काव्य भाषा विषयक मान्तयाएँ

वर्ड्सवर्थ के काव्य भाषा सिद्धान्त पर विचार करने से पूर्व उनके पूर्व, उनकी काव्यभाषा विषयक मान्यताओं पर दृष्टिगत करना आवश्यक है। प्रसिद्ध कवि **इतालवी दाँते** (1265-1321 ई.) की मान्यता थी कि काव्य में ग्राम-भाषा का प्रयोग हेय और त्याज्य है। इसका समर्थन अनेक कवियों ने किया था। वस्तुत: वर्ड्सवर्थ के पूर्व काव्य भाषा के विषय में 2 प्रकार के विचारों का प्रचलन था—

(i) सामान्य बोलचाल की भाषा का आग्रह एवं प्रवृत्ति और

(ii) विशिष्ट या असाधारण भाषा का आग्रह एवं प्रवृत्ति।

वर्ड्सवर्थ द्वारा पूर्ववर्ती काव्य भाषा का विरोध—वर्ड्सवर्थ ने अपने पूर्ववर्ती काव्यभाषा को एक सिरे से नकारते हुए उसे दूषित (Vicious) विकृत (Distorted) सत्याभासी (Glossy), भावहीन (Unfeeling), कृत्रिम आभावाली इत्यादि विविध संज्ञाओं से उपमित किया।

काव्य की भाषा कैसी हो, इस विषय में उन्होंने कई महत्वपूर्ण बातें कही हैं। भारतवर्ष के संस्कृत काव्यशास्त्र के आचार्य कुन्तक ने तो रीति को काव्य की आत्मा मान लिया था। उन्होंने रीति को विशिष्ट पद-रचना अर्थात् भाषा का विशिष्ट रूप बतलाया। वास्तव में, काव्य का आरम्भ सभी देशों में उसी भाषा के माध्यम से होता है जो विशिष्ट जनों की नहीं, अपितु जनसामान्य की भाषा होती है।

Scanned with CamScanner

जिस तीव्र गति से जीवन और जीवन की भाषा में परिवर्तन होता है, उस गति से साहित्य और साहित्य की भाषा में परिवर्तन नहीं होता। अंग्रेजी भाषा के अध्ययन-अध्यापन को वर्ड्सवर्थ के समय तक लगभग एक सौ वर्ष पूरे हो गये थे परन्तु आज के साहित्य में हिन्दी जैसे शब्दों और वाक्य-विन्यास का प्रयोग हो रहा है, इस प्रकार का परिवर्तन अंग्रेजी की काव्यभाषा में नहीं आया था।

जब कभी कोई काव्य-रीति रूढ़ हो जाती है, तभी उसके प्रति किसी महान् साहित्यकार की प्रतिभा विरोध का स्वर ऊँचा करती है। वर्ड्सवर्थ का स्वर अपने युग की ऐसी ही रीतिबद्धता के प्रति विद्रोही रूप में व्यक्त हुआ था।

वर्ड्सवर्थ रीतिबद्धता को अस्वाभाविक मानते थे। उनका कथन था कि "मैंने कई ऐसे अभिव्यंजना प्रयोगों को जो स्वतः उचित और सुन्दर हैं, बचाया है, क्योंकि निम्न कोटि के कवियों ने उनका इतना अधिक प्रयोग बार-बार किया है कि उनके प्रति ऐसी अरुचि उत्पन्न हो गयी है कि उसे किसी कला के द्वारा दूर नहीं किया जा सकता है।"

उनका यह भी मत था कि सभी देशों के प्राचीनतम कवियों ने प्रायः वास्तविक घटनाओं के द्वारा उत्तेजित भावों के कारण कविताओं की रचना की है। उन्होंने प्राकृतिक रूप से तथा मनुष्य के रूप में लिखा है। चूँकि उनके भाव सशक्त थे, इसलिए उनकी भाषा निर्भीक और अलंकृत होती थी। बाद में निम्नकोटि के कवियों ने उस भाषा का अनुकरण किया। यद्यपि उनमें उन भावों का उद्रेक नहीं था।

ऐसी अनुभूतियों और विचारों के लिए भी उसका सुयोग होने लगा, जिनके साथ उसका कोई प्राकृतिक सम्बन्ध नहीं रह गया था। इस प्रकार, अनजान से एक ऐसी भाषा बन गयी, जो मनुष्यों की वास्तविक भाषा से तत्वतः भिन्न हो गयी।

उनके मत के अनुसार—"भाव एवं विचार तथा भाषा का सम्बन्ध स्वाभाविक है। जिस प्रकार का और जिस कोटि का भाव होगा, उसी प्रकार की और उसी कोटि की भाषा होगी।"

वर्ड्सवर्थ का मनुष्यों की वास्तविक भाषा से तात्पर्य उस भाषा से था जो भावों और विचारों के साथ स्वाभाविक रूप से जुड़ी हुई हो और उन भावों और विचारों को सहज रूप से व्यक्त कर सके।

साधारण भाषा का अर्थ वर्ड्सवर्थ ने तुच्छ भाषा के रूप में नहीं माना। इतना ही नहीं, वर्ड्सवर्थ ने प्रारम्भिक काव्य भाषा और साधारण भाषा का अन्तर भी स्पष्ट किया।

उन्होंने कहा कि प्रारम्भ में काव्य की भाषा और साधारण भाषा में अन्तर था। इसका एक अन्य कारण यह भी था कि उसमें छन्द का प्रयोग पहले से ही हो चला था। यही कारण था कि उसके द्वारा लोग वास्तविक जीवन की भाषा की अपेक्षा अधिक प्रभावित होने लगे थे।

प्रभाव का यह कारण अर्थात् छन्द, उनके वास्तविक जीवन से भिन्न था। बाद के कवियों ने इसका दुरुपयोग करना आरम्भ कर दिया। कालान्तर में छन्द इस असाधारण भाषा का प्रतीक बन गया।

जिस किसी ने छन्द में लिखना आरम्भ किया, उसने अपनी प्रतिभा और सामर्थ्य के अनुसार उस शुद्ध और प्रारम्भिक भाषा में अपनी भाषा मिला दी। इस प्रकार, एक नवीन भाषा बन गयी जो मनुष्यों की वास्तविक भाषा नहीं रह गयी थी।

काव्य भाषा के गुण—वर्ड्सवर्थ ने जिस प्रकार काव्य की वस्तु साधारण जीवन से ली है, उसी प्रकार, उसने भाषा भी वहीं से ग्रहण की है। उनकी दृष्टि में "इन मनुष्यों का सम्पर्क उन सर्वोत्तम वस्तुओं से रहता है, जिसमें भाषा का सर्वोत्तम अंश उपलब्ध होता है। अपने सामाजिक स्तर और अपने परिचय की संकीर्ण परिधि तथा समानता के कारण वे सामाजिक कृत्रिम प्रदर्शनों के वश में अपेक्षाकृत कम रहते हैं। इसके कारण वे अपनी अनुभूतियों और विचारों को सहज रूप से व्यक्त करते हैं। इसलिए बार-बार अनुभवों तथा नियमित अनुभूतियों से उत्पन्न होने वाली यह भाषा कवियों द्वारा निर्मित समृद्ध भाषा की अपेक्षा अधिक स्थायी एवं दार्शनिक भाषा होती है।"

टी. एस. इलियट की तरह वर्ड्सवर्थ ने भी सामान्य भाषा को अधिक उपादेय माना और उसी का समर्थन किया। वर्ड्सवर्थ से पूर्व कृत्रिम भाषा के लिए जो नियम, उपनियम बनाए गए थे, वर्ड्सवर्थ उनके विरुद्ध थे। विशिष्ट काव्यगत उक्तियों, मानवीकरण और वक्रोक्ति आदि के वे विरोधी थे। यहाँ तक कि वे काव्य रचना में विपर्यय और वैषम्य के प्रति भी अरुचि प्रकट करते थे। अनावश्यक रूप से ढूँसी गयी पौराणिक कथाएँ, भावाभास तथा दंत कथाएँ भी वर्ड्सवर्थ को स्वीकार नहीं थीं। समग्रतः वे कृत्रिमता तथा सीमित काव्यरूपों को मान्यता देने

Scanned with CamScanner

...द थे। काव्य की शैली के सम्बन्ध में भी वर्ड्सवर्थ ने आपत्तियाँ उठाई हैं। इतना सब कुछ होते हुए भी ...र्थ ने काव्य में कृत्रिमता की अपेक्षा सरल भाषा के प्रयोग पर ही विशेष बल दिया है।

...वह गद्य और पद्य की भाषा में अन्तर नहीं मानते थे। गद्य की भाषा पद्य में परिवर्तित हो सकती है। उन्होंने ...ओं में भी अपेक्षाकृत गद्य की भाषा को ही महत्व प्रदान किया था। उनका मत था कि दोनों भाषाओं की ...जना करने वाली इन्द्रियाँ तथा दोनों को ग्रहण करने वाली इन्द्रियाँ एक ही हैं और इनका राग और रुचि दोनों ...समान हैं। जनसाधरण की भाषा से वर्ड्सवर्थ का तात्पर्य था जिसका उन्होंने अपने ग्रन्थ 'लिरिकल बैलेड्स' ...तिरिक्त किसी भी अन्य ग्रन्थ में उपयोग नहीं किया है।

वर्ड्सवर्थ की काव्य भाषा सिद्धान्त की आलोचना

वर्ड्सवर्थ की काव्यभाषा सिद्धान्त की मान्यताओं की घोर आलोचना हुई। उनके मित्र 'कॉलरिज' ने ही ...ग्राफिया लिटरेरिया' के 17वें से 20वें, इन 4 अध्यायों में उनकी एक-एक प्रमुख मान्यताओं की धज्जियाँ ...कर रख दीं। **कॉलरिज** ने कहा–

(1) मेरी पहली आपत्ति यह है कि भाषा विषयक् वर्ड्सवर्थ का नियम केवल काव्य के एक विशिष्ट वर्गों पर ...लागू हो सकता है। इसे कविता मात्र के सामान्य नियम के रूप में स्वीकार करने का अर्थ होगा, कविता के विषय ...क्षेत्र को सीमित करना।

(2) कॉलरिज ने गद्य और पद्य की भाषा की एकरूपता की आलोचना करते हुए कहा कि, "एक तो ...त्यिक गद्य की भाषा ही बोलचाल की भाषा से भिन्न उसका परिनिष्ठित रूप होती है, दूसरे छन्द-रचना और गद्य ...ना में शब्दों का क्रम और संयोजन अलग होता है। अत: दोनों की भाषा को एक मानना भूल होगी। कॉलरिज ...इस सम्बन्ध में यह आलोचना की है कि छन्द का आविर्भाव आवेगदीप्ति क्षणों में होता है और तद्नुसार आवेग ...की अभिव्यक्ति स्वयं छन्द लय से संयुक्त होकर छन्दमयी हो जाती है। स्वयं वर्ड्सवर्थ भी कविता का सम्बन्ध आवेग ...मानते हैं। वर्ड्सवर्थ की गद्य शैली और उनकी कविताएँ स्वयं अन्तर्विरोध के उदाहरण हैं। वस्तुत: गद्य की भाषा ...और काव्य की भाषा में अन्तर है।"

(3) कॉलरिज ने वर्ड्सवर्थ की इस मान्यता का भी खण्डन किया कि ग्रामीण भाषा के दोषों के परिहार हेतु ...न शब्दों को निकाल देना चाहिए जो अरुचि और जुगुप्सा पैदा करने वाले हों। कॉलरिज का मानना है कि ग्रामीण ...भाषा का यदि परिमार्जन कर लिया जाये तो वह ग्रामीण भाषा कहाँ रही?

वर्ड्सवर्थ ने भाषा की कृत्रिमता एवं आडम्बर का विरोध करते हुए वास्तविक भाषा पर बल दिया था। इस ...सम्बन्ध में कॉलरिज का आरोप है कि प्रत्येक मनुष्य की भाषा उसके ज्ञान, क्रिया, संवेदना, शिक्षा के स्तर की ...भिन्नताओं के कारण पृथक्-पृथक् होती है और काव्य में स्वाभाविक भाषा के स्थान पर उस भाषा का प्रयोग होता ...है जो संस्कार रूप में कवि के मनो-मस्तिष्क पर पूर्व से ही अपना अधिकार जगाए रखती है।

मूल्यांकन–कॉलरिज की उक्त आलोचनाओं के सन्दर्भ में सबसे महत्वपूर्ण बात विलियम वर्ड्सवर्थ के ...बारे में यही कही जा सकती है कि वर्ड्सवर्थ न तो आलोचक थे और न आलोचना के लिए उन्होंने आलोचना लिखी। ...वर्ड्सवर्थ की काव्य भाषा सिद्धान्त की उपर्युक्त मान्यताओं की खूब आलोचनाएँ हुईं परन्तु यह निर्दिवाद सत्य ...है कि वर्ड्सवर्थ ने अपने काव्य भाषा सिद्धान्त के द्वारा भाषा में कृत्रिमता, बनावटीपन एवं आडम्बरपूर्ण भाषा का ...तिरस्कार करते हुए अपने सिद्धान्त के द्वारा काव्य भाषा को एक नवीन दृष्टि प्रदान ही नहीं की बल्कि काव्य भाषा ...में जनसाधारण के भावों को समाहित किया।

Scanned with CamScanner